भील जनजाति में शैक्षिक स्तर एवं प्रवासन के मध्य संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. ज्योति डाबर
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शासकीय महाविद्यालय पवई, पन्ना (म.प्र.)

सारांश:- प्रवास एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय प्रक्रिया है, जो क्षेत्रीय असमानताओं, आर्थिक अवसरों तथा सामाजिक कारकों से प्रभावित होती है। भारत में प्रवास के प्रमुख कारणों में गरीबी, रोजगार की खोज, पारिवारिक प्रभाव (प्रतिकर्षक कारक) तथा बेहतर रोजगार, शिक्षा एवं पूर्व प्रवासियों की उपस्थिति (आकर्षक कारक) शामिल हैं। इस शोध का उद्देश्य भील जनजाति की शैक्षणिक स्थिति प्रवास की प्रवृत्ति में परिवर्तन एवं प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले का चयन किया गया तथा 400 उत्तरदाताओं पर आधारित प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात होता है कि प्रवास एवं शिक्षा के मध्य सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध विद्यमान है।

मुख्य शब्द:- प्रवास, प्रतिकर्षक-आकर्षक कारक, भील जनजाति, शैक्षणिक स्थिति, सांस्कृतिक परिवर्तन

प्रस्तावना:- प्रवास एक सार्वभौमिक घटना है, जिसमें व्यक्ति अपने निवास स्थान को स्थायी या अर्द्ध-स्थायी रूप से बदलता है। यह प्रक्रिया आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित होती है। भारत जैसे विकासशील देश में प्रवास मुख्यतः क्षेत्रीय असमानताओं के कारण होता है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित अवसरों के कारण लोग शहरी क्षेत्रों की ओर आकर्षित होते हैं। प्रवास मानव सभ्यता की एक प्राचीन एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने निवास स्थान को स्थायी अथवा अर्द्ध-स्थायी रूप से परिवर्तित करता है। यह केवल भौगोलिक स्थानांतरण नहीं है, बल्कि इसके साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय परिवर्तन भी जुड़े होते हैं। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में प्रवास की प्रकृति, स्वरूप एवं कारणों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। विशेष रूप से विकासशील देशों जैसे भारत में प्रवास की प्रक्रिया क्षेत्रीय असमानताओं, संसाधनों के असमान वितरण तथा रोजगार के अवसरों की कमी से गहराई से प्रभावित होती है।

भारत में जनसंख्या परिवर्तन के तीन प्रमुख घटकों जन्म, मृत्यु एवं प्रवास में प्रवास का विशेष महत्व है, क्योंकि यह न केवल जनसंख्या के आकार को प्रभावित करता है, बल्कि उसकी संरचना, वितरण एवं गुणात्मक विशेषताओं को भी परिवर्तित करता है। ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवास, भारत की अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन का एक प्रमुख संकेतक है। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित संसाधन, कृषि पर निर्भरता, बेरोजगारी एवं निम्न जीवन स्तर जैसे कारक लोगों को अपने मूल स्थान को छोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं, जिन्हें प्रतिकर्षक कारक कहा जाता है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध बेहतर रोजगार अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ एवं उच्च जीवन स्तर लोगों को आकर्षित करते हैं, जिन्हें आकर्षक कारक कहा जाता है। प्रवास की यह प्रक्रिया केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव भी अत्यंत व्यापक हैं। जब व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है, तो वह अपने साथ अपनी संस्कृति, परंपराएँ एवं सामाजिक व्यवहार भी लेकर जाता है, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है। वहीं दूसरी ओर, प्रवास के कारण पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन, पारिवारिक विघटन तथा सामाजिक असमानताओं में वृद्धि जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं।

भारत में प्रवास के प्रतिरूपों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों के बीच प्रवास की तीव्रता एवं दिशा में भिन्नता पाई जाती है। जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में प्रवास का एक बड़ा भाग विवाह, रोजगार एवं पारिवारिक कारणों से संबंधित है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी एवं बेरोजगारी प्रवास के प्रमुख कारण बने हुए हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा एवं कौशल विकास के अवसरों की कमी भी युवाओं को शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवास करने के लिए प्रेरित करती है।

जनजातीय समाज, विशेषकर भील जनजाति, प्रवास के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण अध्ययन विषय प्रस्तुत करता है। जनजातीय क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक विकास का स्तर अपेक्षाकृत निम्न होने के कारण यहाँ के लोग बेहतर अवसरों की खोज में प्रवास करने के लिए बाध्य होते हैं। साथ ही, आधुनिकीकरण एवं नगरीकरण के प्रभाव से उनके पारंपरिक जीवन-शैली, संस्कृति एवं सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन हो रहा है। इस संदर्भ में प्रवास न केवल आर्थिक परिवर्तन का माध्यम है, बल्कि यह सांस्कृतिक रूपांतरण की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। मध्यप्रदेश के झाबुआ जिला में निवासरत भील जनजाति के संदर्भ में यह अध्ययन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह क्षेत्र सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ माना जाता है तथा यहाँ प्रवास की प्रवृत्ति व्यापक रूप से विद्यमान है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार आधुनिकीकरण एवं प्रवास की प्रक्रिया भील जनजाति के सांस्कृतिक स्वरूप को प्रभावित कर रही है। अतः यह शोध न केवल प्रवास के कारणों एवं प्रतिरूपों का विश्लेषण करता है, बल्कि इसके सामाजिक

एवं सांस्कृतिक प्रभावों को भी स्पष्ट करता है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, समाजशास्त्रियों एवं भूगोलवेत्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इससे प्रवास से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु प्रभावी नीतियाँ बनाने में सहायता मिल सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य:- भील जनजाति में प्रवास एवं शिक्षा के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना:- H_0 भील जनजाति में प्रवास एवं शिक्षा के मध्य के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

शोध प्रविधि:- प्रस्तुत अध्ययन में वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के झाबुआ जिला का चयन किया गया, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत भील जनजाति को अध्ययन का समग्र माना गया तथा प्रत्येक चयनित उत्तरदाता को अध्ययन की इकाई के रूप में लिया गया। उत्तरदाताओं के चयन के लिए स्तरीकृत नमूनाकरण एवं उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण तकनीकों का उपयोग किया गया, जिसके अंतर्गत पाँच तहसीलों से कुल 40 ग्रामों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया तथा प्रत्येक ग्राम से 10 उत्तरदाताओं का चयन कर कुल 400 उत्तरदाताओं का नमूना निर्धारित किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया, जिसमें प्राथमिक आंकड़े संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथा द्वितीयक आंकड़े विभिन्न सरकारी प्रकाशनों, शोध पत्रों एवं इंटरनेट स्रोतों से प्राप्त किए गए। संकलित आंकड़ों का परीक्षण, वर्गीकरण, संहिताकरण एवं सारणीकरण कर उनका विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से एसपीएसएस सॉफ्टवेयर द्वारा किया गया, जिससे अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप निष्कर्ष प्राप्त किए जा सके।

अध्ययन का विश्लेषण:- प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आंकड़ों का विश्लेषण सामाजिक विज्ञानों के उपयुक्त सांख्यिकीय उपकरणों के माध्यम से किया गया है, जिससे प्रवास एवं शैक्षिक स्तर के मध्य संबंध को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि क्या शैक्षिक स्थिति प्रवास की प्रवृत्ति को प्रभावित करती है तथा यह संबंध सांख्यिकीय रूप से कितना महत्वपूर्ण है। अध्ययन में उच्च प्रवास एवं निम्न प्रवास वाले परिवारों की शैक्षिक स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है:-

तालिका: 1 उच्च प्रवास एवं निम्न प्रवास वाले परिवारों की शैक्षणिक स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण

शैक्षणिक स्तर	उच्च प्रवास (संख्या/%)	निम्न प्रवास (संख्या/%)
पाँचवी	58 (17.6 %)	9 (12.9%)
आठवीं	37 (11.2%)	14 (20.0%)
दसवीं	26 (7.9%)	2 (2.9%)
अर्धशिक्षित	67 (20.3%)	4 (5.7%)
अशिक्षित	142 (43.1%)	41 (58.6%)
कुल	370 (100%)	70 (100%)

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उच्च प्रवास वाले परिवारों में अशिक्षित (43.1 प्रतिषत) एवं अर्धशिक्षित (20.3 प्रतिषत) वर्ग का प्रभुत्व है। इससे यह संकेत मिलता है कि कम शैक्षिक स्तर वाले परिवारों में प्रवास की प्रवृत्ति अधिक होती है। इसके विपरीत, निम्न प्रवास वाले समूह में आठवीं तक शिक्षित व्यक्तियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक (20 प्रतिषत) है, जो यह दर्शाता है कि मध्यम शिक्षा स्तर वाले परिवार अपेक्षाकृत स्थिर होते हैं।

प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर काई-वर्ग ($\chi 2$) परीक्षण का उपयोग किया गया, जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि शैक्षिक स्तर एवं प्रवास के मध्य संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या नहीं। काई-वर्ग मान ($\chi 2$) = 24.793, स्वतंत्रता की डिग्री (Df) = 4, सारणी मान (सारणी मान 5 प्रतिषत सार्थक स्तर पर) = 9.488 प्राप्त हुआ। चूंकि प्राप्त काई-वर्ग मान (24.793) सारणी मान (9.488) से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना (H_0) को अस्वीकार किया जाता है। इसका अर्थ है कि शैक्षिक स्तर एवं प्रवास के मध्य संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक है।

प्रवास के प्रतिरूपों का विश्लेषण:- अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्रवास मुख्यतः आर्थिक कारणों से प्रेरित है। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित रोजगार अवसर, कृषि पर निर्भरता एवं निम्न आय स्तर लोगों को प्रवास के लिए प्रेरित करते हैं।

अ. अशिक्षित एवं अर्धशिक्षित वर्ग:- मुख्यतः श्रमिक कार्य हेतु प्रवास, अस्थायी एवं मौसमी प्रवास अधिक

ब. शिक्षित वर्ग:- रोजगार एवं शिक्षा हेतु योजनाबद्ध प्रवास, स्थायी प्रवास की प्रवृत्ति

सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण:- प्रवास के परिणामस्वरूप भील जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए। पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन, संयुक्त परिवार प्रणाली का क्षरण, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि, आधुनिक शिक्षा एवं शहरी संस्कृति का प्रभाव आदि, हालांकि, इसके साथ ही कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए जैसे सांस्कृतिक पहचान का ह्रास सामाजिक असुरक्षा एवं पारिवारिक विघटन।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि प्रवास का स्तर शिक्षा से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। निम्न शैक्षिक स्तर वाले परिवारों में प्रवास की प्रवृत्ति अधिक होती है। प्रवास एक आर्थिक आवश्यकता के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है। सांख्यिकीय परीक्षण यह प्रमाणित करता है कि शिक्षा एवं प्रवास के मध्य संबंध महत्वपूर्ण एवं विश्वसनीय है। अतः यह कहा जा सकता है कि प्रवास केवल आर्थिक बाध्यता नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक परिवर्तन को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। अध्ययन यह संकेत करता है कि यदि शिक्षा स्तर में सुधार किया जाए, तो प्रवास की प्रकृति एवं दिशा को अधिक संतुलित एवं सकारात्मक बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष:- प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि प्रवास एक जटिल, बहुआयामी तथा गतिशील प्रक्रिया है, जो सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों के सम्मिलित प्रभाव से संचालित होती है। विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देश में प्रवास की प्रवृत्ति क्षेत्रीय असमानताओं, संसाधनों के असंतुलित वितरण तथा रोजगार के सीमित अवसरों से गहराई से प्रभावित होती है। अध्ययन क्षेत्र झाबुआ जिला में निवासरत भील जनजाति के संदर्भ में यह पाया गया कि प्रवास का प्रमुख आधार आर्थिक है, जहाँ गरीबी, बेरोजगारी एवं कृषि पर अत्यधिक निर्भरता व्यक्तियों को अपने मूल निवास स्थान से बाहर जाने के लिए प्रेरित करती है। अध्ययन के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि प्रवास के प्रतिकर्षक एवं आकर्षक कारक इस प्रक्रिया को निरंतर गतिशील बनाए रखते हैं। जहाँ एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में अवसरों की कमी, निम्न जीवन स्तर एवं सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन प्रतिकर्षक कारकों के रूप में कार्य करते हैं, वहीं दूसरी ओर शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ एवं बेहतर जीवन स्तर आकर्षक कारकों के रूप में आकर्षण उत्पन्न करते हैं।

शैक्षिक स्तर के संदर्भ में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि निम्न एवं अर्धशिक्षित वर्गों में प्रवास की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है, जबकि अपेक्षाकृत उच्च शिक्षित वर्ग में प्रवास योजनाबद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण होता है। काई-वर्ग परीक्षण के परिणामों ने यह सिद्ध किया कि शिक्षा एवं प्रवास के मध्य संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक है, जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि शिक्षा प्रवास के स्वरूप एवं दिशा को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रवास के प्रभाव द्विपक्षीय पाए गए हैं। एक ओर यह आर्थिक उन्नति, सामाजिक गतिशीलता एवं आधुनिक जीवन शैली को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक संरचना एवं पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन एवं विघटन की स्थिति भी उत्पन्न करता है। विशेष रूप से भील जनजाति में आधुनिकीकरण के प्रभाव से सांस्कृतिक संक्रमण की प्रक्रिया तीव्र होती जा रही है, जिससे पारंपरिक जीवन शैली एवं सांस्कृतिक पहचान प्रभावित हो रही है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रवास को केवल आर्थिक प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक

परिवर्तन का माध्यम है, जो समाज की संरचना, संस्कृति एवं विकास की दिशा को प्रभावित करता है।

सुझाव:- अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं, जो प्रवास की समस्या के समाधान एवं जनजातीय समुदाय के समग्र विकास में सहायक हो सकते हैं:-

1. ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन:- ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प, कृषि आधारित उद्योगों एवं स्वरोजगार योजनाओं को बढ़ावा देकर स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न किए जाने चाहिए, जिससे अनावश्यक प्रवास को रोका जा सके।

2. शिक्षा का प्रसार एवं गुणवत्ता सुधार:- जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने हेतु विद्यालयों की संख्या, शिक्षकों की उपलब्धता एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए। व्यावसायिक एवं कौशल आधारित शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है।

3. आधारभूत संरचना का विकास:- ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, बिजली, स्वास्थ्य, संचार एवं पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए, जिससे जीवन स्तर में सुधार हो एवं लोगों को प्रवास के लिए बाध्य न होना पड़े।

4. जनजातीय विकास योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन:- सरकार द्वारा संचालित जनजातीय विकास योजनाओं का प्रभावी एवं पारदर्शी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए, ताकि लक्षित समुदाय को वास्तविक लाभ प्राप्त हो सके।

5. प्रवासी श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा:- प्रवासी श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, बीमा, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं न्यूनतम मजदूरी सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके।

6. महिला सशक्तिकरण:- प्रवास के कारण महिलाओं की भूमिका में वृद्धि होती है, अतः उनके लिए स्वरोजगार, शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

7. सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयास:- जनजातीय संस्कृति, परंपराओं एवं लोककला के संरक्षण हेतु विशेष कार्यक्रम एवं नीतियाँ बनाई जानी चाहिए, जिससे आधुनिकीकरण के प्रभावों के बावजूद सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रह सके।

8. क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना:- नीति-निर्माताओं को क्षेत्रीय विकास में संतुलन स्थापित करने हेतु विशेष योजनाएँ बनानी चाहिए, जिससे पिछड़े क्षेत्रों में भी विकास के समान अवसर उपलब्ध हो सकें।

अंततः यह कहा जा सकता है कि प्रवास को नियंत्रित करने के लिए केवल प्रतिबंधात्मक उपाय पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि इसके मूल कारणों जैसे गरीबी, बेरोजगारी एवं शिक्षा की कमी को दूर करना आवश्यक

है। समग्र एवं समावेशी विकास नीतियों के माध्यम से ही प्रवास की समस्या का संतुलित समाधान संभव है तथा जनजातीय समुदायों के सतत एवं समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

संदर्भ

1. त्रिपाठी शंकुतला: छŸााीसगढ़ से अल्पकालिक ग्रामीण उत्प्रवास अप्रकाषित शोध प्रबंध, भूगोल अध्ययन शाला, पं. रवि षंकर शुक्ल विष्वविद्यालय रायपुर, छ.ग. 2001।
2. सिंह अवधेष प्रताप: गरीबी और प्रवास, रावत पब्लिकेषन, जयपुर, 2001।
3. शर्मा सरला एवं एम पी गुप्ता: छŸााीसगढ़ से अल्पकालिक ग्रामीण उत्प्रवास- मध्यप्रदेष के रायपुर जिले का प्रतीक अध्ययन, भू-विज्ञान, अंक-12, भाग 1- 2, 1997 जनवरी, जुलाई, पृ.क्र. 16-28।
4. आर. गुप्ता एवं मनोज कुमार सिंह: प्रवास के प्रतिरूप तथा प्रक्रम रमेष पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली, 2011, पृ. क्रं. 347-359।
5. आर. पी. चतुर्वेदी एवं एस. डी. मौर्य: मानव एवं आर्थिक भूगोल जनसंख्या प्रवास, भोगोलिक शब्दकोष, 2003 पृ. क्रं. 240।
6. श्री निवास के: नगरों में बढ़ती जनसंख्या और उसका जीवन स्तर य योजना अंक 15 अगस्त 1990 पृ. कृ. 24-84।
7. लट्टा ललित: भील जनजाति: पहचान एवं विकास, मानक पब्लिकेशंन्स प्रा.लि. नई दिल्ली, 2003, पृ. क्र. 12।